© 2014 IJSRSET | Volume V, Issue I | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRSET

जवाहरलाल नेहरु एवं सरदार बल्लभ भाई पटेल के राजनीतिक विचारों की तुलनात्मक समीक्षा एवं वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

जितेंद्र हरिजन

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, पी.के.रॉय.मेमोरियल कॉलेज, धनबाद।

शोध सार : जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एवं आधुनिक भारत के वे दो सबसे प्रमुख नेताओं में से हैं जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के बाद के युग को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जवाहरलाल नेहरू भारत के पहले प्रधान मंत्री थे, जो 1947 से 1964 में अपनी मृत्यु तक वे देश सेवा करते रहे। नेहरू एक समाजवादी थे और एक मिश्रित अर्थव्यवस्था में विश्वास करते थे, जिसमें एक मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र और सामाजिक कल्याण नीतियों पर जोर था। वह विदेश नीति में धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और गुटनिरपेक्षता के भी प्रबल पक्षधर थे। वहीँ वल्लभभाई पटेल, जिन्हें "भारत के लौह पुरुष" के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख नेता थे और उन्होंने रियासतों को नए स्वतंत्र भारत में एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। भारत के पहले उप प्रधान मंत्री और गृह मंत्री के रूप में, वह भारतीय संघ में 500 से अधिक रियासतों के एकीकरण के लिए जिम्मेदार थे। पटेल एक कट्टर राष्ट्रवादी थे और एक मजबूत, केंद्रीकृत सरकार में विश्वास करते थे। नेहरू और पटेल के बीच कुछ मुद्दों पर मतभेद थे, विशेष रूप से शासन और विदेश नीति के प्रति उनके दृष्टिकोण में। समाजवाद और गुटनिरपेक्षता पर नेहरू का जोर एक मजबूत, केंद्रीकृत सरकार और एक पश्चिमी-समर्थक विदेश नीति में पटेल के विश्वास के विपरीत था। हालाँकि, दोनों नेताओं ने भारत की स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता साझा की और भारत की स्वतंत्रता के बाद के युग को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह आलेख नेहरु एवं पटेल के राजनीतिक विचारों की समीक्षा प्रस्तुत करता है साथ ही यह बताने का प्रयास करता की नेहरु एवं पटेल के राजनीतिक विचारों में क्या समानताएं एवं भिन्नताएं थी I यह आलेख नेहरु एवं पटेल के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता पर भी एक दृष्टि प्रदान करता है I

कुंजी शब्द : पंडित जवाहरलाल नेहरु, सरदार वल्लभभाई पटेल, आधुनिक भारत, राजनीतिक विचार

परिचय : जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर, 1889 को इलाहाबाद, भारत में एक धनी और प्रमुख परिवार में हुआ था। उनके पिता मोतीलाल नेहरू एक सफल वकील और प्रमुख राजनीतिज्ञ थे। नेहरू की शिक्षा भारत में और बाद में इंग्लैंड में हुई, जहां उन्होंने हैरो स्कूल और ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज में पढ़ाई की। भारत लौटने के बाद, नेहरू भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का हिस्सा बन गए। उन्होंने ब्रिटिश शासन के लिए अहिंसक प्रतिरोध की वकालत करते हुए महात्मा गांधी और आंदोलन के अन्य नेताओं के साथ मिलकर काम किया। नेहरू को उनकी राजनीतिक सक्रियता के कारण कई बार जेल जाना पड़ा, जिसमें 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भी शामिल था। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, नेहरू भारत के पहले प्रधान मंत्री बने, 1964 में अपनी मृत्यु तक वह इस पद पर रहे। प्रधान मंत्री के रूप में, नेहरू ने मिश्रित अर्थव्यवस्था की स्थापना, विकास सहित कई महत्वपूर्ण नीतियों और पहलों को लागू किया। एक मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र, और सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना। नेहरू भी धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के प्रबल समर्थक थे, और भारत के विकास के लिए शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान के महत्व में विश्वास करते थे। उन्होंने गुटनिरपेक्ष

आंदोलन के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने शीत युद्ध में भारत की स्वतंत्रता और तटस्थता को बनाए रखने की मांग की। नेहरु का कद इतना बड़ा था कि वे खुद को ग्लोबल लीडर के रूप में स्थापित कर चुके थे I

वहीँ सरदार वल्लभभाई पटेल, जिन्हें सरदार पटेल के नाम से भी जाना जाता है, का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को नडियाद, गुजरात, भारत में हुआ था। वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख नेता थे और नेहरु एवं गाँधी के समकालीन थे I इन्होंने भी भारत की स्वतंत्रता के बाद के युग को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पटेल की शिक्षा भारत में और बाद में इंग्लैंड में हुई, जहाँ उन्होंने कानून की पढ़ाई की। भारत लौटने के बाद, उन्होंने कानून की प्रैक्टिस शुरू किया I कांग्रेस में शामिल होकर पटेल ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी और अन्य नेताओं के साथ मिलकर काम किया, ब्रिटिश शासन के लिए अहिंसक प्रतिरोध की वकालत की। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, पटेल को भारत के पहले उप प्रधान मंत्री और गृह मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्होंने रियासतों को नए स्वतंत्र भारत में एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, कूटनीति का उपयोग करते हुए और जब आवश्यक हो, यह सुनिश्चित करने के लिए कि ये राज्य भारतीय संघ में शामिल हो गए। पटेल के प्रयासों ने भारत की क्षेत्रीय अखंडता को सुनिश्चित करने में मदद की और जातीय और धार्मिक आधार पर देश के विखंडन को रोका। राजनीति में अपने काम के अलावा, पटेल एक प्रतिबद्ध समाज सुधारक भी थे और उन्होंने गरीबों और वंचितों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए काम किया। उन्होंने भूमि सुधार नीतियों का समर्थन किया और महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए काम किया।

पंडित जवाहरलाल नेहरु के राजनीतिक विचार- जवाहरलाल नेहरू एक समाजवादी थे और एक मिश्रित अर्थव्यवस्था में विश्वास करते थे, जिसमें एक मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र और सामाजिक कल्याण नीतियों पर जोर था। नेहरू का मानना था कि आर्थिक विकास से समाज के सभी वर्गों, विशेषकर गरीबों और वंचितों को लाभ होना चाहिए। अपनी आर्थिक नीतियों के अलावा, नेहरू धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य होना चाहिए, जहां सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार किया जाए और धर्म के आधार पर कोई भेदभाव न हो। नेहरू भी लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्ध थे और उनका मानना था कि भारतीय लोगों को अपना नेता चुनने और राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार होना चाहिए। नेहरू विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता के भी प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि भारत को शीत युद्ध में अपनी स्वतंत्रता और तटस्थता बनाए रखनी चाहिए, और खुद को संयुक्त राज्य या सोवियत संघ के साथ संरेखित नहीं करना चाहिए। नेहरू ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने विकासशील देशों के बीच स्वतंत्रता और तटस्थता को बढ़ावा देने की मांग की। मोटे तौर पर देखा जाय तो नेहरू की राजनीतिक विचारधारा की विशेषता में – उनकी विदेश नीति में समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और गुटनिरपेक्षता के प्रति प्रतिबद्धता थी। उनकी नीतियां और विचार आज भी भारतीय राजनीति और समाज को प्रभावित करते हैं। मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र और सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के साथ मिश्रित अर्थव्यवस्था पर जोर देने वाली नेहरू की आर्थिक नीतियों का भी भारत पर स्थायी प्रभाव पड़ा। नेहरू के नेतृत्व में, भारत ने औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण के एक कार्यक्रम की शुरुआत की जिसने आने वाले दशकों में देश के आर्थिक विकास की नींव रखी। अपनी घरेलू नीतियों के अलावा, नेहरू ने भारत की विदेश नीति को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह शीत युद्ध में गुटनिरपेक्षता और तटस्थता के प्रबल पक्षधर थे, और उन्होंने गुटनिरपेक्ष आंदोलन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नेहरू की गुटनिरपेक्षता और विदेश नीति में स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता ने भारत को विश्व मंच पर एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने में मदद की।

सरदार वल्लभभाई पटेल के राजनीतिक विचार- पटेल राजनीति के लिए अपने व्यावहारिक और यथार्थवादी दृष्टिकोण के लिए जाने जाते थे और उनकी राजनीतिक विचारधारा लोकतंत्र, राष्ट्रवाद और सामाजिक न्याय में उनके दृढ़ विश्वास में निहित थी। पटेल लोकतंत्र में दृढ़ विश्वास रखते थे और उनका मानना था कि भारतीय लोगों को अपना नेता चुनने और राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार होना चाहिए। वह एक कट्टर राष्ट्रवादी भी थे, जो भारत की एकता और अखंडता में विश्वास करते थे, और विभिन्न रियासतों को नए स्वतंत्र राष्ट्र में एकीकृत करने के लिए अथक प्रयास करते थे। इन राज्यों के एकीकरण में पटेल की भूमिका को भारतीय राजनीति में उनके सबसे महान योगदानों में से एक माना जाता है। लोकतंत्र और राष्ट्रवाद के

प्रति अपनी प्रतिबद्धता के अलावा पटेल सामाजिक न्याय के भी हिमायती थे। उन्होंने गरीबों और वंचितों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए काम किया और भूमि सुधार नीतियों के प्रबल समर्थक थे जिससे ग्रामीण आबादी को लाभ होगा। पटेल ने महिलाओं के अधिकारों का भी समर्थन किया और महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए काम किया। पटेल की राजनीतिक विचारधारा व्यावहारिक और यथार्थवादी थी, और वे कठिन निर्णय लेने और आवश्यकता पड़ने पर निर्णायक कार्रवाई करने की क्षमता के लिए जाने जाते थे। वह कानून के शासन के प्रबल समर्थक थे और समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखने के महत्व में विश्वास करते थे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सरदार वल्लभभाई पटेल की राजनीतिक विचारधारा लोकतंत्र, राष्ट्रवाद और सामाजिक न्याय में उनके विश्वास में निहित थी। भारतीय राजनीति में, विशेष रूप से राष्ट्रीय एकता और एकीकरण के क्षेत्रों में उनके योगदान को आज भी भारत में याद किया जाता है और मनाया जाता है।

जवाहरलाल नेहरु एवं सरदार बल्लभ भाई पटेल के राजनीतिक विचारों की तुलना- इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल दोनों भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता थे और उन्होंने स्वतंत्र भारत के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। किंतु जहाँ उनकी राजनीतिक विचारधारा का प्रश्न है कई पक्षों में दोनों के विचार एक-दुसरे से मेल खाते हैं साथ ही कुछ मसलों पर मतभेद भी दिखलाई पड़ता है I अत: नेहरु एवं पटेल के राजनीतिक विचारों में आपसी समानता एवं भिन्नता का अध्ययन करना इस आलेख की विषय के लिहाज़ से अत्यंत महत्वपूर्ण है I

नेहरू और पटेल के बीच प्रमुख अंतरों में से एक समाजवाद के प्रति उनका दृष्टिकोण था। नेहरू एक समाजवादी थे और एक मिश्रित अर्थव्यवस्था में विश्वास करते थे, जिसमें एक मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र और सामाजिक कल्याण नीतियों पर जोर था। दूसरी ओर, पटेल निजी उद्यम और औद्योगीकरण के माध्यम से आर्थिक विकास और विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित करन चाहते थे। उनका मानना था कि आर्थिक विकास में निजी क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका थी और उन्होंने व्यापक सरकारी नियंत्रण का समर्थन नहीं किया।लेकिन ऐसा नहीं है कि पटेल विकास के समाजवादी मॉडल के खिलाफ थे I

नेहरू और पटेल के बीच एक और अंतर विदेश नीति के प्रति उनका दृष्टिकोण था। नेहरू शीत युद्ध में गुटनिरपेक्षता और तटस्थता के प्रबल समर्थक थे, और उन्होंने गुटनिरपेक्ष आंदोलन के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दूसरी ओर, पटेल राष्ट्रीय सुरक्षा पर अधिक केंद्रित थे और उनका मानना था कि चीन द्वारा उत्पन्न खतरे का मुकाबला करने के लिए भारत को संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ खुद को सँरेखित करने की आवश्यकता है।

इन मतभेदों के बावजूद, नेहरू और पटेल ने अपनी राजनीतिक विचारधाराओं में समानता भी थी । दोनों लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्ध थे और मानते थे कि भारतीय लोगों को अपना नेता चुनने और राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार होना चाहिए। वे दोनों धर्मनिरपेक्षता और समानता के महत्व में विश्वास करते थे, और यह सुनिश्चित करने के लिए काम करते थे कि सभी धर्मों और समुदायों के साथ समान व्यवहार किया जाए। नेहरू और पटेल दोनों मजबूत राष्ट्रवादी थे जो भारत की एकता और अखंडता के लिए प्रतिबद्ध थे। उन्होंने राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के महत्व को पहचाना और विभिन्न रियासतों को नए स्वतंत्र राष्ट्र में एकीकृत करने के लिए मिलकर काम किया।

वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता- नेहरू और पटेल दोनों इस दुनियां में नहीं हैं,इनके निधन के कई दशक हो गए हैं फिर भी भारत की वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में उनकी विरासत की प्रासंगिकता बनी हुई है।एक आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक भारत के नेहरू के दृष्टिकोण के साथ-साथ सामाजिक कल्याण नीतियों पर उनका जोर आज भी भारत के राजनीतिक और सामाजिक विकास को प्रभावित करता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) और भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) जैसे शैक्षिक संस्थानों की स्थापना के उनके प्रयासों ने भारत की अर्थव्यवस्था और समाज को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी तरह, भारत की राष्ट्रीय एकता और एकीकरण में पटेल का योगदान आज भी अत्यधिक प्रासंगिक है। विभिन्न रियासतों को नए स्वतंत्र राष्ट्र में एकीकृत करने में उनकी भूमिका ने एक एकीकृत और एकजुट भारत की नींव रखने में मदद की। राष्ट्रीय सुरक्षा पर उनका जोर और एक मजबूत और सक्षम सेना के महत्व की उनकी मान्यता वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में प्रासंगिक बनी हुई है, विशेष रूप से चीन

और पाकिस्तान के साथ भारत के चल रहे सीमा विवादों के आलोक में। इसके अलावा, नेहरू और पटेल की लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता भारत के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में प्रासंगिक बनी हुई है। इन मूल्यों का महत्व केवल हाल के वर्षों में बढ़ा है, क्योंकि भारत सांप्रदायिकता, जातिवाद और असमानता जैसे मुद्दों से जूझ रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सुची :

1. *मेहरोत्रा,एन.सी. एवं कपूर, रंजना* (2002). *सरदार वल्लभभाई पटेल व्यक्ति एवं विचार, आत्मा राम एंड संस, दिल्ली* .
2. *वैद्य, प्रभाकर* (1977): "*वल्लभभाई पटेल – एक परखड मुल्यम्मन" (मराठी), मुंबई: अभिनव प्रकाशन, पृ.*28–29
3. *गांधी, राजमोहन* (1991): "*पटेल: ए लाइफ", अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, पी.*49.
4. *नादुरकर, जी.एम. (संपा.)* (1974–78): "*सरदार पटेल शताब्दी खंड" (खंड* 1), *अहमदाबाद, पृष्ठ.*488.
5. *शंकर, वी.* (1998): "*सरदार प्लेस इन हिस्ट्री", इन: 'वल्लभभाई पटेल: ए बायोग्राफी ऑफ हिज विजन एंड आइडियाज', नई दिल्ली: डीप एंड डीप पब्लिकेशन्स, पीपी.*462–63
6. *पाठक, देवव्रत और प्रवीण शेठ* (1980): '*सरदार वल्लभभाई पटेल: फ्रॉम सिविक टू नेशनल लीडरशिप', अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, पीपी.*4–5